बड़े भाई साहब

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

बड़े भाई साहब की डाँट खाकर भी छोटा भाई किसका तिरस्कार न कर पाता था?

Answer:

बड़े भाई साहब की डाँट खाकर भी छोटा भाई सुखद हरियाली, हवा के सुखद झोंकों, फुटबॉल-कबड्डी तथा बॉलीबाल की उछल-कूद, दाँव-पेंच तथा तेजी एवं फुरती का तिरस्कार न कर पाता था।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 2.

'बड़े भाई साहब' कहानी में छोटा भाई अपने भाई से किस प्रकार डरता था?

Answer:

छोटा भाई अपने बड़े भाई की भाँति हर समय पढ़ने-लिखने में रुचि नहीं रखता था। वह प्रतिभाशाली तो था परंतु खेलकूद, सैर-सपाटे, दोस्तों के साथ गप्पें मारने जैसे कामों में उसे अधिक आनंद आता था। समय को व्यर्थ नष्ट करने पर बड़े भाई साहब उसे कड़ी डाँट लगाते थे तथा बात-बात पर उपदेश देते थे। हर समय बड़े भाई की फटकार और घुड़कियाँ सुनकर वह सहम-सा जाता था। अतः पढ़ाई के अतिरिक्त जब भी वह कोई अन्य कार्य करता तो डरता रहता कि कहीं भाईसाहब उसे डाँट न दें।

Question 3.

बड़े भाई साहब उपदेश की कला में माहिर थे, पर छोटा भाई मेहनत से घबराता था, उसे क्या अच्छा लगता था?

Answer:

बड़े भाई में बड़प्पन का अधिकार-भाव था, जिस कारण वे हर समय छोटे भाई को पढ़ाई करने, समय व्यर्थ न करने, खेलकूद न करने आदि का उपदेश देते रहते थे।

छोटा भाई प्रतिभाशाली था, परंतु निरंतर पढ़ाई करते रहना उसके स्वभाव में नहीं था। उसे खुली हवा में घूमना, कनकौए उड़ाना और लूटना, गप्पबाजी आदि करना अधिक अच्छा लगता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निबंधात्मक प्रश्न

Question 4.

प्रेमचंद की 'बड़े भाई साहब' कहानी में छोटा भाई लगातार प्रथम आकर भी अपने असफल होने वाले भाई साहब का पूरा सम्मान करता है, इसके पीछे निहित मूल्यों की समीक्षा कीजिए।

Answer:

'बड़े भाई साहब' कहानी में दोनों भाइयों में स्वभावगत अनेक अंतर दृष्टिगत होते हैं। इसके बावजूद उन के जीवन-मूल्य एक समान हैं। दोनों भाई प्रेम, स्नेह के साथ खून के रिश्ते से बंधे हैं तथा घर से बाहर भी बिना लड़ाई-झगड़े के साथ रहते हैं।

बड़े भाई साहब अध्ययनशील, गंभीर, उत्तरदायित्वपूर्ण व्यक्तित्व वाले हैं। वे निरंतर स्वाध्याय में लीन रहते हैं। यद्यपि परीक्षा में आसानी से सफल नहीं हो पाते तथापि वे अध्ययन में कोई कमी नहीं छोड़ते। वे निरंतर इस बात के लिए प्रयासरत रहते हैं कि छोटा भाई समय को व्यर्थ नष्ट न करके पढ़ाई करे और आगे बढ़े। वे उसे जब भी खेलते-कूदते, गप्पबाजी करते, कनकौए उड़ाते देखते हैं, तो डाँट-फटकार और उपदेश देने लगते हैं।

इन सबके पीछे परिवार द्वारा प्राप्त जीवन-मूल्यों की अहम् भूमिका है। बड़ा भाई यदि धीर-गंभीर, उत्तरदायित्वपूर्ण, छोटे भाई की देखभाल करने वाला है, तो छोटा भाई भी उन्हें सम्पूर्ण आदर-सम्मान देने वाला है। वह उनकी हर बात सिर झुकाकर सुनता है और स्वीकार करता है। इस प्रकार दोनों भाईयों में उच्च कोटि के मूल्य अपने समाज एवं परिवार से आए हैं।

Question 5.

बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई पर रौब जमाने के लिए लम्बे-लम्बे भाषण देते हैं। उनकी अत्यधिक बोलने की आदत उनकी कमजोरी है अथवा खूबी? तर्क समेत उत्तर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

बड़े भाई साहब अत्यंत वाक्पटु थे तथा भाषण देने की कला में माहिर थे। वे तरह-तरह के तर्क ढूँढ कर स्वयं को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करते थे और छोटे भाई की कमियों को इंगित करते रहते थे। उनके अत्यधिक बोलने की आदत से लेखक को सदैव कुछ-न-कुछ सुनना पड़ता था।

बड़े भाई साहब की अत्यधिक बोलने की आदत उनकी कमजोरी और खूबी दोनों थी। बोलने की आदत उनकी कमज़ोरी इसलिए थी क्योंकि वे जो कुछ छोटे भाई को कहते थे, उसे वे स्वयं व्यवहृत नहीं कर पाते थे। स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए वे अनेकानेक तर्क तो जुटाते थे, परंतु स्वयं को उन पर खरा नहीं उतार पाते थे। छोटे भाई पर तत्काल रौब तो पड़ जाता था परंतु दीर्घकालीन प्रभाव नहीं पड़ पाता था। यह भी सच है कि उनके भाषणों से घबरा कर छोटे भाई ने कक्षा में बहुत मेहनत की और प्रथम स्थान पाया। घमंड आदि दुर्गुण उसमें पनप भी नहीं पाए। वह सदैव बड़े भाई को आदर, सम्मान देता रहा। बड़े भाई के बोलने की आदत ने सदैव छोटे भाई का उद्धार ही किया।

Question 6.

'बड़े भाई साहब' नामक कहानी से आपको क्या प्रेरणा मिलती है? सोदाहरण स्पष्ट करें।

Answer:

प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'बड़े भाई साहब' एक प्रेरणादायी कहानी है जो हमें अपनी क्षमताओं, परिस्थितियों तथा अधिकारों की व्यवहारिकता को समझने के लिए प्रेरित करती है।

व्यक्ति को कोई भी उपदेश देने से पूर्व स्वयं की तथा श्रोता की सही स्थिति, सोच तथा क्षमता को अवश्य समझ लेना चाहिए। यदि सामने वाला भयवश या आदरवश चुप रहता है तो यह हमारी विजय नहीं है। हमारी 'कथनी' और 'करनी' का अंतर हमारी स्थिति को हास्यास्पद बना सकता है।

इस कहानी के दोनों पात्र स्वयं की आदतों से मजबूर हैं। बड़ा भाई आत्मविश्वास से पूर्ण, अध्ययनशील, धुन का पक्का होने के साथ-साथ उपदेशात्मक प्रवृत्ति का है। वह अपने छोटे भाई को जिन बातों के लिए डाँटता-फटकारता है, उन शरारतों को करते हुए भी छोटा भाई पढ़ाई-लिखाई में उससे अव्वल रहता है। इसके बावजूद शालीनता का पालन करते हुए वह अपने बड़े भाई को पलट कर जवाब नहीं देता है। यह कहानी हमें सिखाती है कि हम अपने उपदेशों वाले सिद्धांतों में स्वयं भी सिद्धवान हों, छोटों को सदैव रौब से नहीं रखा जाना चाहिए तथा पढ़ाई के साथ-साथ खेल-कूद भी छात्र-जीवन के आवश्यक अंग होने चाहिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2015
अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 7.

बड़े भाई साहब ने पहले-पहल लेखक को किस लिए डाँटा था?

Answer:

बड़े भाई साहब ने लेखक को पहले-पहल तब डाँटा था, जब वह भोर का सारा समय गुल्ली-डंडे की भेंट करके ठीक भोजन के समय लौटा था। बड़े भाई साहब को यह भी लगने लगा था कि प्रथम आने के कारण लेखक को घमंड हो गया है। अतः बड़ा भाई होने के नाते लेखक को ठीक राह पर लाना उसका कर्त्तव्य है।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 8.

कहानी के अनुसार बड़े भाई साहब को क्या विशेषाधिकार मिला हुआ था?

Answer:

कहानी 'बड़े भाई साहब' में बड़े भाई लेखक से पाँच साल बड़े थे। इस नाते उन्हें अपने छोटे भाई को डाँटने-डपटने का पूरा अधिकार था। इतने पर भी यदि छोटा भाई (लेखक) बेराह चलने की कोशिश करेगा, तो वे थप्पड़ का प्रयोग करने से भी पीछे नहीं हटेंगे। उनके अनुसार बड़ा होने के कारण मिला उनका यह स्वाभाविक विशेषाधिकार स्वयं विधाता भी उनसे नहीं छीन सकता।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 9.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

"इस तरह अंग्रेज़ी पढ़ोगे, तो ज़िंदगी-भर पढ़ते रहोगे और एक हर्फ़ न आएगा। अंग्रेज़ी पढ़ना कोई हँसी-खेल नहीं है कि जो चाहे, पढ़ ले, नहीं ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा सभी अंग्रेज़ी के विद्वान हो जाते। यहाँ रात-दिन आँखें फोड़नी पड़ती हैं और खून जलाना पड़ता है, तब कहीं यह विद्या आती है। और आती क्या है, हाँ कहने को आ जाती है। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख सकते, बोलना तो दूर रहा। और मैं कहता हूँ, तुम कितने घोंघा हो कि मुझे देखकर भी सबक नहीं लेते। मैं कितनी मेहनत करता हूँ यह तुम अपनी आँखों से देखते हो, अगर नहीं देखते, तो यह तुम्हारी आँखों का कसूर है, तुम्हारी बुद्धि का कसूर है। इतने मेले-तमाशे होते हैं, मुझे तुमने कभी देखने जाते देखा है? रोज़ ही क्रिकेट और हॉकी मैच होते हैं। मैं पास नहीं फटकता। हमेशा पढ़ता रहता हूँ। उस पर भी एक-एक दरजे में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता हूँ, फिर भी तुम कैसे आशा करते हो कि तुम यों खेल-कूद में वक्त गँवाकर पास हो जाओगे? मुझे तो दो ही तीन साल लगते हैं, तुम उम्र-भर इसी दरजे में पड़े सड़ते रहोगे। अगर तुम्हें इस तरह उम्र गँवानी है, तो बेहतर है, घर चले जाओ और मज़े से गुल्ली-डंडा खेलो। दादा की गाढ़ी कमाई के रुपये क्यों बरबाद करते हो?"

(क) बड़े भाई साहब के अनुसार अंग्रेज़ी सीखना आसान क्यों नहीं है?

(ख) अपनी मेहनत के विषय में बड़े भाई साहब ने क्या-क्या समझाया?

(ग) छोटे भाई को घर लौटने का परामर्श क्यों दिया जा रहा था?

Answer:

(क) बड़े भाई साहब के अनुसार अंग्रेज़ी सीखना अत्यधिक कठिन कार्य है। अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए दिन-रात आँखें फोड़नी पड़ती हैं, खून जलाना पड़ता है तब कहीं जाकर यह विद्या आती है और वह भी नाम मात्र को। बड़े-बड़े विद्वान भी शुद्ध अंग्रेज़ी नहीं लिख पाते, बोलना तो बहुत दूर की बात है। उनकी राय में यदि अंग्रेज़ी पढ़ना इतना आसान होता, तो हर कोई ऐरा-गैरा नत्थू-खैरा अंग्रेज़ी का विद्वान हो जाता।

(ख) अपनी मेहनत के विषय में बड़े भाई साहब ने लेखक को समझाया कि वह दिन-रात जी तोड़ परिश्रम करता है। मेले-तमाशे हों या हॉकी क्रिकेट के मैच वह उनके पास तक नहीं फटकता। हमेशा पढ़ते रहने के बावजूद वह एक ही कक्षा में दो-दो, तीन-तीन साल पड़ा रहता है। यदि इतनी मेहनत के बाद उनकी यह स्थिति है, तो लेखक का क्या हाल होगा जो पढ़ाई से अधिक महत्त्व खेल को देता है।

(ग) लेखक छात्रावास (हॉस्टल) में रहते हुए अपना अधिकांश समय पढ़ने की अपेक्षा खेलकूद में गँवा देते थे। बड़े भाई साहब को लगता था कि ऐसा करके छोटा भाई दादा की गाढ़ी कमाई बरबाद कर रहा है। इसी बात से नाराज होकर उन्होंने छोटे भाई को घर लौटने का परामर्श दिया।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निबंधात्मक प्रश्न

Question 10.

तालीम के विषय में बड़े भाई साहब के विचारों पर टिप्पणी कीजिए। क्या आप उनके उदाहरण को अपना आदर्श बना सकते हैं? तर्क सहित उत्तर लिखिए।

Answer:

'बड़े भाई साहब' पाठ में बड़े भाई साहब ने शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया है। उनका मानना है कि इस प्रणाली में रटंत विद्या को बढ़ावा दिया है जो बच्चों के स्वाभाविक विकास में बाधक तत्व है। बड़े भाई साहब के दृष्टिकोण में अंग्रेज़ी शिक्षा पर बल देना, इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ाना तथा बीजगणित और रेखागणित पढ़ना व्यर्थ है। हर विषय का हर व्यक्ति से कोई प्रयोजन नहीं होता। 'समय की पाबंदी' जैसे– छोटे-छोटे विषयों पर लंबे-चौड़े चार पेज के निबंध लिखने को लेखक ने समय की बर्बादी कहा है जो उनके दृष्टिकोण से व्यावहारिक नहीं है। बड़े भाई साहब का मानना है कि इस शिक्षा प्रणाली में विषयों की अधिकता होने के कारण छात्रों को खेलने-कूदने का भी समय नहीं मिलता।

नहीं हम बड़े भाई साहब के विचारों से पूरी तरह सहमत नहीं हैं क्योंकि बड़े भाई साहब नवीं कक्षा में होते हुए जो कुछ पढ़ रहे थे वह किसी भी विषय का सामान्य व व्यावहारिक ज्ञान था जो बच्चों की समझने की शक्ति को बढ़ाकर उनका स्वाभाविक विकास करता है। बच्चे यदि समय-तालिका बनाकर पढ़ें, तो वे हर विषय के साथ-साथ खेलने-कूदने के लिए भी समय निकाल सकते हैं। जहाँ तक बड़े भाई साहब का अनुभव-ज्ञान को महत्त्व देने की बात है वह सही है क्योंकि जीवन में पुस्तकीय ज्ञान के साथ-साथ अनुभव ज्ञान का भी अपना विशेष महत्त्व है।

***[नोट**–'हाँ' के साथ विद्यार्थियों के अन्य तर्क भी मान्य होंगे।]

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 11.

'बड़े भाई साहब' पाठ के आधार पर बताइए कि छोटे भाई की शालीनता किस बात में थी? क्या उसने शालीनता निभाई? स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

छोटे भाई की शालीनता इस बात से प्रकट होती है कि वह सिर झुकाकर, मौन होकर बड़े भाई की डाँट-फटकार सुन लेता था। वह बड़े भाई साहब का अदब करता था और इसीलिए उनकी नज़र बचाकर कनकौए उड़ाता था। माँझा देना, कन्ने बाँधना, पतंग टूर्नामेंट की तैयारियाँ आदि समस्याएँ सब गुप्त रूप से हल की जाती थीं। यद्यपि छोटे भाई के दिल में बड़े भाई के प्रति आदर की भावना कम हो गई थी फिर भी खुद के लिए बड़े भाई के त्याग व सुखों का बलिदान देखकर छोटा भाई स्वयं पर शर्मिंदा हो जाता था। लेखक ने बड़े भाई के फटकार का उत्तर देने का कभी दुस्साहस नहीं किया।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 12.

'बड़े भाई साहब' की स्वभावगत विशेषताएँ कौन-कौन सी थी? लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'बड़े भाई साहब' की स्वभावगत विशेषताओं को निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत प्रकट किया जा सकता है–

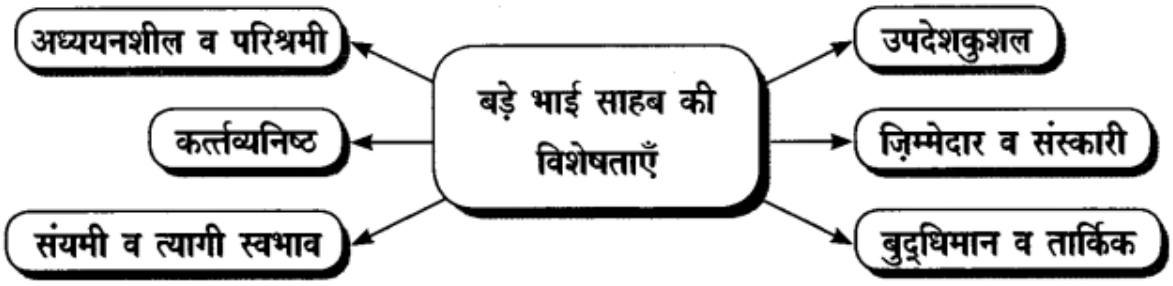

(*i*) **अध्ययनशील व परिश्रमी**– वे हमेशा पढ़ते रहते थे। वे बहुत परिश्रमी थे। एक ही कक्षा में तीन-तीन बार फेल हो जाने के बाद भी पढ़ाई में उनकी लगन कम नहीं हुई। वे दिन-रात पढ़ते रहते थे।

(*ii*) **कर्त्तव्यनिष्ठ**– बड़े भाई साहब अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में कोई कमी नहीं रखते थे। वे लेखक का खूब ध्यान रखते थे। उनका यह कहना था कि 'मेरे होते हुए तुम कभी बेराह न चल पाओगे'– यह उनके कर्त्तव्यनिष्ठ व्यवहार को प्रकट करता है।

(*iii*) **संयमी व त्यागी स्वभाव**– बड़े भाई साहब की भी इच्छा होती थी कि वे भी पतंग उड़ाएँ, वे भी खेलने जाएँ, लेकिन वे यह सोचते थे कि अगर मैं ऐसा करूँगा, तो अपने छोटे भाई को कैसे सँभालूँगा? बड़े भाई साहब ने अपने मन को नियंत्रित कर रखा था।

(*iv*) **बुद्धिमान व तार्किक (तर्कशील)**– बड़े भाई ने लेखक को समझाने के लिए सटीक तर्कों का प्रयोग किया और अपने तर्कों से वे लेखक को निरुत्तर कर देते थे। रावण, अम्मा, दादा और हेडमास्टर साहब के उदाहरणों से बड़े भाई साहब की बुद्धिमानी प्रकट होती है। लेखक के बदलते भाव को वे आसानी से समझ लेते थे।

(*v*) **ज़िम्मेदार व संस्कारी**– बड़े भाई के मन में अपने बड़ों के प्रति आदर की भावना थी। वहाँ वे अपने खर्च के प्रति ज़िम्मेदारी समझते थे और फिजूल खर्चों से बचना चाहते थे।

(*vi*) **उपदेशकुशल**– बड़े भाई साहब उपदेश देने में कुशल थे। उनके उपदेशों को सुनकर लेखक नतमस्तक हो जाते थे। बड़े भाई साहब इसके लिए एक से बढ़कर एक ज्ञान की बातें लेखक को आसानी से समझा देते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 13.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

अपने हेडमास्टर साहब को ही देखो। एम.ए. हैं कि नहीं और यहाँ के एम.ए. नहीं, ऑक्सफोर्ड के। एक हजार रुपए पाते हैं; लेकिन उनके घर का इंतज़ाम कौन करता है? उनकी बूढ़ी माँ। हेडमास्टर साहब की डिग्री यहाँ आकर बेकार हो गई। पहले खुद घर का इंतज़ाम करते थे। खर्च पूरा न पड़ता था। कर्ज़दार रहते थे। जब से उनकी माता जी ने प्रबंध अपने हाथ में किया है, जैसे घर में लक्ष्मी आ गई है।

(क) हेडमास्टर साहब ने एम.ए. कहाँ से किया? उनका वेतन कितना था?

(ख) हेडमास्टर साहब की डिग्री कहाँ पर बेकार हो गई तथा कैसे?

(ग) हेडमास्टर साहब के घर लक्ष्मी कैसे आ गई?

Answer:

(क) हेडमास्टर साहब ने एम.ए. की डिग्री ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी से प्राप्त की थी। उनका वेतन एक हजार रुपए प्रतिमाह था।

(ख) एम.ए. की डिग्री पाने के बाद भी हेडमास्टर साहब अपने घर के खर्चों को पूरा नहीं कर पाते थे। हमेशा घर पर कोई-न-कोई कर्ज़दार खड़ा ही रहता था। इतने पढ़े-लिखे होने के बाद भी वे अपने घर का खर्च सँभाल नहीं पाते थे इसलिए यहाँ ऐसा कहा गया है कि यहाँ उनकी डिग्री बेकार हो गई।

(ग) जब से हेडमास्टर साहब के घर का खर्च उनकी माताजी ने सँभालना शुरू किया, तब से महीने का खर्च बड़ी आसानी से पूरा हो जाता था। कभी भी दरवाजों पर कोई कर्ज़दार नहीं पड़ा रहता था। इन्हीं कारणों से यहाँ कहा गया है कि जबसे उनकी माताजी ने घर का प्रबंध अपने हाथों में लिया। तब से मानों घर में लक्ष्मी आ गई हो।

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 14.

छोटा भाई बड़े भाई साहब से बचने के लिए क्या-क्या करता था? 'बड़े भाई साहब' कहानी के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

छोटा भाई, बड़े भाई साहब की नज़र से बचने का प्रयास करता था। वह बड़े भाई के साये से भी दूर भागता था। वह बड़े भाई की आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता था और कमरे में चोरों की तरह दबे पाँव आता था। छोटा भाई बड़े भाई साहब से छिपकर कनकौए उड़ाता था। माँझे देना, कन्ने बांधना, पंतग टूर्नामेंट की तैयारी आदि गुप्त रूप से करता था। छोटे भाई ने उनसे बचने के लिए एक कठिन टाइम-टेबुल भी बनाया। वह बड़े भाई की आँखों से बचकर खेलने चला जाता था, ताकि उनके रुद्र रूप का सामना न करना पड़े।

Question 15.

"टाइम टेबल बनाकर पढ़ना अधिकतर छात्रों को अच्छा नहीं लगता।" क्यों? कोई दो कारण दीजिए।

Answer:

छात्र स्वभाव से स्वच्छंद व मुक्त होते हैं। उनका भावनाओं पर नियंत्रण भी (असंभव होता है।) नहीं रहता है। 'टाइम-टेबल' एक प्रकार का बंधन होता है जो बालक स्वभावतः पसंद नहीं करते। दूसरा कारण यह है कि टाइम-टेबल बनाते समय छात्र खेलकूद या विश्राम को स्थान नहीं देते हैं, जबकि स्वभावतः उनके जीवन में यही दो बातें महत्त्वपूर्ण होती हैं। इन्हीं कारणों से टाइम-टेबल बनाकर छात्रों को पढ़ना अच्छा नहीं लगता।

निबंधात्मक प्रश्न

Question 16.

'अहंकार मनुष्य का विनाश करता है'–इस कथन को स्पष्ट करने के लिए बड़े भाई साहब ने क्या-क्या उदाहरण दिए? अपने शब्दों में वर्णन कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

अहंकार मनुष्य का विनाश कर देता है। अहंकार के कारण 'रावण' का भी नाश हो गया था। रावण भूमंडल का स्वामी था। वह एक चक्रवर्ती राजा था। संसार के सभी राजा उसके अधीन थे। वह अंग्रेज़ों से भी अधिक बलशाली व महान था, परंतु अहंकारी होने के कारण उसका विनाश हो गया। यहाँ तक कि 'आग' और 'पानी' के देवता भी रावण के दास थे, परंतु घमंड ने रावण का नामो-निशान तक मिटा दिया। रावण को मरते समय एक चुल्लू पानी देने वाला भी नहीं बचा। अभिमानी आदमी दीन-दुनियाँ दोनों से हाथ धो लेता है। बड़े भाई साहब ने शैतान का उदाहण भी दिया कि इसी 'अहंकार' के कारण ईश्वर ने शैतान को नरक में ठकेल दिया था। शाहेरूम ने भी एक बार अहंकार किया था इसलिए वह भी भीख माँग-माँगकर मर गया। बड़े भाई साहब ने लेखक के परीक्षा में पास होने की तुलना अंधों के हाथ बटेर लगने से करते हुए कहा कि गुल्ली-डंडे में भी कभी-कभी अंधा चोट निशाने पर लगा देता है। इससे कोई सफल खिलाड़ी नहीं बन जाता।

Question 17.

बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर-तरीकों पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचारों से सहमत है? उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के तौर-तरीकों पर विभिन्न प्रकार से व्यंग्य किया है। उन्होंने इतिहास पर व्यंग्य करते हुए कहा कि इंगलिस्तान का इतिहास पढ़ने से कोई लाभ नहीं होगा। आठ-आठ हेनरी हुए जिनका नाम याद रखना आसान नहीं है। इतिहास में दर्जनों जेम्स और बीसीयों चार्ल्स हुए। एक ही नाम के पीछे दोयम, सोयम, चहारूम, पंचुम लगाते रहते हैं। इसी प्रकार लेखक ने जामेट्री पर व्यंग्य करते हुए कहा कि जामेट्री में 'अ' 'ब' 'स' की जगह 'स' 'ब' 'अ' लिख दिया, तो अंक शून्य मिलेंगे। अध्यापक व्यर्थ की बात के लिए छात्रों का खून करते हैं। लेखक तर्क देते हैं कि दाल-भात-रोटी खाई या भात-दाल-रोटी खाई, इसमें क्या अंतर है, मगर परीक्षकों को क्या परवाह। परीक्षक तो यही चाहते हैं कि विद्यार्थी अक्षर-अक्षर रट डालें। इसी रटंत का नाम शिक्षा रख छोड़ा है। इसे लेखक ने सिर-पैर की बात कही है। 'रेखागणित' विषय की अव्यावहारिकता पर व्यंग्य करते हुए कहा गया कि रेखा पर लम्ब गिरा दो तो आधार लंब से दुगना होगा। अगर यह दुगना नहीं चौगुना हो जाए या आधा हो जाए, तो इससे विद्यार्थियों को क्या लाभ? साहित्य में 'समय की पाबंदी' पर लेख लिखने के लिए कई पन्ने लिखने पड़ते हैं। लेखक इसे व्यर्थ कहते हैं क्योंकि लेखक के अनुसार 'समय की पाबंदी' या समय के महत्त्व के बारे में कौन नहीं जानता? हम उनके विचारों से सहमत नहीं है क्योंकि बड़े भाई साहब अपनी असफलता का कारण इस शिक्षा व्यवस्था को मानते हैं। जिन विषयों का उदाहरण दिया गया है वे सभी तकनीकी तौर पर आवश्यक है और 'ज्ञान' के विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से लेखक द्वारा दिया गया तर्क उचित प्रतीत नहीं होता।

Question 18.

'बड़े भाई साहब' की सहज बुद्धि अत्यंत तीव्र थी।' उनके व्यावहारिक होने के दो उदाहरण दीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

अपने सालाना इम्तिहान में प्रथम आने के बाद लेखक के मन में अहंकार आ गया था, जबकि बड़े भाई-साहब फेल हो गए थे। लेखक के मन में बड़े भाई साहब से बदला लेने की भावना बढ़ रही थी, परंतु उन्हें दुखी व उदास देखकर लेखक ने उनसे कुछ कहा तो नहीं, परंतु अधिक आज़ादी से खेल-कूद में समय गँवाने लगे। लेखक के रंग-ढंग से यह स्पष्ट हो रहा था कि अब बड़े भाई का उनपर रोब नहीं रहा, परंतु बड़े भाई साहब ने लेखक की इस भावना को पढ़ लिया। उनकी सहज बुद्धि बड़ी तीव्र थी। एक दिन लेखक जब अपना सारा समय गुल्ली-डंडे को भेंटकर आ रहे थे, तो भाई साहब ने लेखक को डाँटना शुरू किया। बड़े भाई साहब ने लेखक को घमंडी कहते हुए रावण का उदाहरण देकर समझाया कि अहंकारियों का पतन निश्चित होता है। बड़े भाई साहब ने लेखक को शैतान का उदाहरण देते हुए तर्कपूर्ण ढंग से समझाया। लेखक को अपने स्वभाव पर खेद हुआ। इसी प्रकार बड़े भाई साहब ने लेखक को समझाते हुए अपनी माँ और पिता (दादा) का उदाहरण देते हुए समझाया कि बड़े भाई साहब के होते हुए लेखक बेराह नहीं चल पाएगा। बड़े भाई साहब की बुद्धिमानी का परिचय तब भी मिलता है जब उन्होंने अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण की बात की, अपनी ज़िम्मेदारियों का उदाहरण दिया। बड़े भाई साहब ने लेखक को डाँटते हुए गले से लगाया और स्पष्टतः कहा कि उनका भी मन कनकौए उड़ाने व कंचे खेलने के लिए ललचाता हैं, परंतु अगर वे स्वयं बेराह चलेंगे तो छोटे भाई को गलतियों करने से कैसे रोकेंगे? अपनी कर्त्तव्य निष्ठा का उदारण देते हुए उन्होंने लेखक को समझाया।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 19.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर लिखिए–

उनकी सहज और तीव्र बुद्धि ने यह भाँप लिया कि मुझे अपने पास होने तथा अव्वल आने पर घमंड हो गया है। उन्होंने मुझे फटकारते हुए कहा कि घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती हैं? रावण भूमंडल का स्वामी था।...मगर उसका अंत क्या हुआ? घमंड ने उसका नाम-निशान तक मिटा दिया, कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा। आदमी और जो कुकर्म चाहे करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनिया दोनों से गया।

(क) उनकी सहज और तीव्र बुद्धि ने क्या भांप लिया?

(ख) छोटे भाई को डाँटते हुए उन्होंने क्या कहा?

(ग) किसी एक अभिमानी का उदाहरण देते हुए बताए कि उसने ऐसा क्या किया जो उसका परिणाम बुरा हुआ?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) उनकी सहज और तीव्र बुद्धि ने भांप लिया कि छोटे भाई (लेखक) को अपने पास होने तथा अव्वल आने पर घमंड हो गया है।

(ख) छोटे भाई को डाँटते हुए उन्होंने कहा कि घमंड तो बड़े-बड़े का नहीं रहा, तुम्हारी क्या हस्ती है? इंसान चाहे जो करे, पर अभिमान न करे, इतराये नहीं। अभिमान किया और दीन-दुनियाँ दोनों से गया।

(ग) रावण भूमंडल का स्वामी था मगर अभिमान ने उसका नामो-निशान तक मिटा दिया। कोई उसे एक चुल्लू पानी देने वाला भी न बचा।

Question 20.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और चाहे आज तुम मेरी ही जमात में आ जाओ और परीक्षकों का यही हाल है, तो निस्संदेह अगले साल तुम मेरे समकक्ष हो जाओगे और शायद एक साल बाद मुझसे आगे भी निकल जाओ, लेकिन मुझमें और तुममें जो पाँच साल अंतर है, उसे तुम क्या, खुदा भी नहीं मिटा सकता। मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.फिल् और डी.लिट् ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है। हमारी अम्माँ ने कोई दरजा नहीं पास किया ओर दादा भी शायद पाँचवीं-छठी जमात के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्या पढ़ लें, अम्माँ और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज्यादा तजुरबा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों, लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज्यादा है।

(क) बड़े भाई साहब अपने छोटे भाई को स्वयं डाँटने का मौका ढूँढ़ते थे या इसके लिए छोटे भाई का रवैया दोषी है? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

(ख) 'समझ किताबें पड़ने से नहीं, दुनिया देखने से आती है।'' आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'ज्ञान हमेशा अनुभव के आगे छोटा है।' गद्यांश के आधार पर सिद्ध करें।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) डाँट खाने के पीछे छोटे भाई का रवैया दोषपूर्ण था। प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होने के बाद लेखक के मन में अहंकार आ गया था और वह अपना सारा समय कनकौओं के पीछे गँवा देता था। बड़े भाई साहब ने अपनी सहज बुद्धि से यह भाँप लिया था।

(ख) उम्र में बड़े होने के कारण दुनिया की समझ और अनुभव अधिक होता है। बड़े भाई साहब ने लेखक को समझाते हुए स्पष्ट रूप से कह दिया था कि तुम चाहे एम०ए और डी०फिल् और डी० लिट् ही क्यों न हो जाओ, मेरे तजुर्बे की बराबरी नहीं कर सकते।

(ग) बड़े भाई साहब ने लेखक को समझाते हुए कहा कि यद्यपि उनकी माँ अनपढ़ है और दादा कम पढ़े-लिखे हैं, फिर भी दोनों भाई अधिक पढ़ लिख कर भी उनकी बराबरी नहीं कर सकते।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 21.

बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

Answer:

छोटा भाई अपना अधिक-से-अधिक समय खेलकूद में व्यतीत करता था। छोटे भाई को सही राह दिखलाना बड़े भाई साहब अपना कर्तव्य समझते थे इसीलिए वे छोटे भाई को अधिक-से-अधिक समय पढ़ाई में ध्यान लगाने एवम् अहंकार न करने की सलाह देते थे।

Question 22.

छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई का टाइम-टेबिल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

Answer:

छोटे भाई ने टाइम-टेबिल बनाते समय यह सोचा कि अब मैं खूब पढ़ूँगा और प्रातः छः बजे से रात ग्यारह बजे तक का टाइम-टेबिल उसने बना लिया, जिसमें खेलकूद का कोई स्थान न था। वह टाइम-टेबिल का पालन नहीं कर सका क्योंकि मैदान की सुखद हरियाली, हवा के झोंके, फुटबॉल की वह उछलकूद, कबड्डी के वह दाँव-घात उसे अज्ञात व अनिवार्य रूप से अपनी ओर खींच लेते थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

निबंधात्मक प्रश्न

Question 23.

बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण किस प्रकार सिद्ध किया है?

Answer:

बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए निम्नलिखित तर्क दिए–

(*i*) अपने छोटे भाई से पाँच साल बड़ा होने के कारण उन्हें ज़िंदगी का जो तजुरबा प्राप्त है वह छोटे भाई को एम.ए. और डी.लिट्. करने के बाद भी नहीं मिल सकता।

(*ii*) समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती अपितु समझदारी दुनिया देखने से आती है। बड़े भाई ने कहा कि वे दोनों भाई भले ही दुनिया की सारी विद्या पढ़ लें, फिर भी अम्माँ को और उनके पिता को उन्हें डाँटने-समझाने का अधिकार सदा रहेगा क्योंकि उन्हें जीवन का तजुरबा है।

(*iii*) बड़े भाई साहब ने यह भी तर्क दिया कि 'अम्माँ' और 'दादा' को हज़ारों ऐसी बातों का ज्ञान है जो किसी भी किताब से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

(*iv*) बड़े भाई साहब ने कहा कि अगर वे बीमार हो जाएँगे, तो छोटे भाई को दादा को पत्र लिखकर सहायता लेनी पड़ेगी। परंतु अगर दादा स्वयं बीमार पड़ेंगे, तो वे अपने अनुभव के आधार पर समाधान निकाल लेंगे, दादा किसी को 'तार' नहीं भेजेंगे।

(*v*) महीने के खर्च की दृष्टि से भी बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव को किताबी ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण बताया। कम पढ़े-लिखे होने के बावजूद दादा कम खर्च में नेकनामी के साथ घर चला लेते हैं। हेडमास्टर साहब की अपेक्षा उनकी माताजी उनसे बेहतर घर का खर्च सँभाल लेती हैं। वहाँ हेडमास्टर साहब की डिग्री बेकार साबित हो जाती है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 24.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

दैव न करे, आज मैं बीमार हो जाऊँ, तो तुम्हारे हाथ-पाँव फूल जाएँगे। दादा को तार देने के सिवा तुम्हें और कुछ न सूझेगा, लेकिन तुम्हारी जगह दादा हों, तो किसी को तार न दें, न घबराएँ, न बदहवास हों। पहले खुद मरज़ पहचानकर इलाज करेंगे, उसमें सफल न हुए, तो किसी डॉक्टर को बुलाएँगे। बीमारी तो खैर बड़ी चीज़ है। हम-तुम तो इतना भी नहीं जानते कि महीने-भर का खर्च महीना-भर कैसे चले। जो कुछ दादा भेजते हैं, उसे हम बीस-बाइस तक खर्च कर डालते हैं और फिर पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते हैं। नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से मुँह चुराने लगते हैं। लेकिन जितना आज हम और तुम खर्च कर रहे हैं, उसके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्ज़त और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन किया है, जिसमें सब मिलकर नौ आदमी थे।

(क) किसके हाथ-पाँव फूलने की बात की गई है और क्यों?

(ख) वे पैसे-पैसे के मुहताज क्यों हो जाते और पैसा खत्म होने पर उनकी क्या स्थिति होती?

(ग) गद्यांश से दादा की किन विशेषताओं का पता चलता है?

Answer:

(क) लेखक (प्रेमचंद) (छोटे भाई) के हाथ-पाँव फूलने की बात की गई है। बड़े भाई साहब लेखक को समझाते हैं कि उम्र व तजुरबा जीवन में अहम चीज़ है। बड़े भाई को लेखक को समझाने का अधिकार जीवन भर रहेगा क्योंकि वे लेखक से पाँच साल बड़े हैं।

(ख) वे पैसे-पैसे को मुहताज हो जाते क्योंकि वे इतना भी नहीं जानते कि महीने भर का खर्च महीना भर कैसे चले। जो कुछ रुपया उनके पिता उन्हें भेजते हैं। वह बीस-बाइस दिन तक खर्च कर डालते हैं। पैसा खत्म होने पर नाश्ता बंद हो जाता है, धोबी और नाई से वे मुँह चुराने लगते हैं।

(ग) गद्यांश से पता चलता है कि दादा क़िफायती थे, समझदार थे। लेखक व बड़े भाई साहब जितना खर्च करते हैं उनके आधे में दादा ने अपनी उम्र का बड़ा भाग इज़्जत और नेकनामी के साथ निभाया है और कुटुम्ब का पालन भी किया है, जिनमें सब मिलाकर नौ आदमी थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2010
गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 25.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबॉल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबाल की वह तेज़ी और फ़ुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

(क) टाइम-टेबिल की अवहेलना के क्या-क्या कारण थे?

(ख) भाईसाहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर क्यों मिल जाता था?

(ग) लेखक भाई साहब के साए से क्यों भागना चाहता था?

Answer:

(क) लेखक टाइम-टेबिल तो बनाता था। पर उस पर अमल नहीं कर पाता था क्योंकि खेल प्रेमी होने के कारण मैदान की सुखद हरियाली, हवा के हल्के-हल्के झोंके, फुटबॉल की उछल-कूद, कबड्डी के दाँव-घात, वॉलीबाल की तेज़ी और फुरती अनायास ही लेखक को अपनी ओर आकर्षित कर लेते थे। इसलिए टाइम-टेबिल की अवहेलना शुरू हो जाती थी।

(ख) लेखक जब टाइम-टेबिल बनाने के बाद भी उस पर अमल नहीं करता और पढ़ाई छोड़कर खेल-कूद में ही व्यस्त हो जाता। तब भाई साहब को लेखक को नसीहत देने और फ़जीहत करने का अवसर मिल जाता।

(ग) खेल प्रेमी होने के कारण लेखक पूरी तरह से खेल में रम जाता। यहाँ तक कि वह टाइम-टेबिल बनाकर उस पर अमल करना भी भूल जाता। छोटे-भाई के इस व्यवहार पर बड़े भाई साहब को उसकी फ़जीहत करने का और नसीहत देने का अवसर मिल जाता। अतः वह उनके साये से भी भागता, उसकी नज़रों से भी दूर रहने का प्रयास करता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 26.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मैं तुमसे पाँच साल बड़ा हूँ और हमेशा रहूँगा। मुझे दुनिया का और ज़िंदगी का जो तजुरबा है, तुम उसकी बराबरी नहीं कर सकते, चाहे तुम एम.ए. और डी.फिल्. और डी.लिट्. ही क्यों न हो जाओ। समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती हे। हमारी अम्मा ने कोई दरजा नहीं पास किया ओर दादा भी शायद पाँचवी-छठी जमात के आगे नहीं गए, लेकिन हम दोनों चाहे सारी दुनिया की विद्य पढ़ लें, अम्मा और दादा को हमें समझाने और सुधारने का अधिकार हमेशा रहेगा। केवल इसलिए नहीं कि वे हमारे जन्मदाता हैं, बल्कि इसलिए कि उन्हें दुनिया का हमसे ज़्यादा तजुर्बा है और रहेगा। अमेरिका में किस तरह की राज-व्यवस्था है, और आठवें हेनरी ने कितने ब्याह किए और आकाश में कितने नक्षत्र हैं, यह बातें चाहे उन्हें न मालूम हों लेकिन हज़ारों ऐसी बातें हैं, जिनका ज्ञान उन्हें हमसे और तुमसे ज़्यादा है।

(क) यह कथन किसका है और उसने बड़े होने का उल्लेख क्यों किया?

(ख) पढ़े लिखे युवा और बुजुर्गों में किसे श्रेष्ठ माना गया है? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'समझ किताबें पढ़ने से नहीं आती, दुनिया देखने से आती है'– इस कथन का विवेचन कीजिए।

Answer:

(क) यह कथन बड़े भाई साहब का है। उसने बड़े होने का उल्लेख इसलिए किया, ताकि वह छोटे भाई को समझा सके कि जीवन में किताबी ज्ञान की अपेक्षा अनुभव ज्ञान अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। छोटा भाई भले ही कक्षा में अव्वल आ गया हो परंतु अनुभव में वह बड़े भाई का मुकाबला नहीं कर सकता। अतः कक्षा में प्रथम आने का उसका घमंड करना व्यर्थ है।

(ख) पढ़े लिखे युवा और बुजुर्गों में से बुजुर्गों को अधिक श्रेष्ठ माना गया है। बुजुर्गों को भले ही इंगलैंड के इतिहास या अमेरिका की राजव्यवस्था के विषय में जानकारी न हो, परंतु उन्हें जीवन का गहरा तजुर्बा होता है। बड़े भाई साहब के दृष्टिकोण में यूँ भी जीवन अनुभव से चलता है न कि किताबी-ज्ञान से। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए बड़े भाई साहब ने अपने हैडमास्टर और उनकी माँ का उदाहरण देकर अनुभव की श्रेष्ठता को सिद्ध किया। अपने माता-पिता के विषय में भी उन्होंने अनुभव ज्ञान को श्रेष्ठ सिद्ध किया।

(ग) लेखक के अनुसार केवल पुस्तकीय ज्ञान से समझ विकसित नहीं होती। समझ और विवेक अनुभव से भी प्राप्त किए जा सकते हैं। बड़े भाई साहब के अनुसार मात्र परीक्षा पास कर लेना बुद्धि का विकास नहीं हैं। पुस्तकीय ज्ञान जब व्यावहारिक ज्ञान से तालमेल बैठा लेता है तभी सफल माना जाता है। अपने हैडमास्टर और अपने माता-पिता का उदाहरण देकर बड़े भाई साहब ने अनुभव ज्ञान का ही महत्त्व दर्शाया है। कम पढ़े-लिखे होने के बावजूद उनके माता-पिता व्यावहारिक ज्ञान व अनुभव के आधार पर जीवन की हर परीक्षा में सफल होते रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2009
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 27.

बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

Answer:

बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं क्योंकि वह अपने छोटे भाई को सही रास्ते पर चलाना चाहते थे और वे चाहते थे कि वह पढ़-लिखकर एक अच्छा ऑफ़िसर बने। उनका छोटा भाई (लेखक) एक चरित्रवान, ईमानदार और कर्तव्यपरायण व्यक्ति बने। यही कर्तव्य बड़े भाई साहब का था। दोनों ही हॉस्टल में रहते थे। अगर वह खुद बेराह चलते तो छोटे भाई से कुछ कहने, समझाने या डाँटने-डपटने का अधिकार खो देते फिर छोटा भाई उनकी बात भी न मानता और न कभी उनसे डरता। इस प्रकार छोटे भाई की रक्षा कौन करता?

Question 28.

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में क्या-क्या परिवर्तन आए?

Answer:

दूसरी बार पास होने पर छोटे भाई के व्यवहार में ये परिवर्तन आए कि वह स्वच्छंद हो गया। बड़े भाई साहब की सहिष्णुता का अनुचित लाभ उठाने लगा। उसे कनकौए उड़ाने का नया शौक पैदा हो गया। सारा समय पतंगबाज़ी में कटने लगा क्योंकि अब उसे बड़े भाई साहब की फ़जीहत का डर न रहा। इसलिए कि बड़े भाई साहब फिर से फेल हो गए थे। उन्होंने भी स्वयं संयम से काम लेना आरंभ कर दिया था और अब वह नरम पड़ गए थे। अतः बड़े भाई साहब के डर से थोड़ा-बहुत पढ़ लेता था वह भी छोटे भाई ने बंद कर दिया क्योकि उसको घमंड हो गया था कि अब पढ़े या न पढ़े पास तो हो ही जाएगे। उसकी तकदीर बलवान है।

Question 29.

बड़े भाई साहब की स्वभावगत किन्हीं दो विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।

Answer:

बड़े भाई साहब की स्वभावगत दो विशेषताएँ ये हैं कि–

(*i*) वह स्वभाव से बड़े अध्ययनशील थे। वह हरदम किताबें खोले बैठे रहते थे और शायद दिमाग को आराम देने के लिए कॉपी पर तरह-तरह के चित्र आदि बनाते थे।

(*ii*) वह उपदेश देने की कला में निपुण थे। वह अपने छोटे भाई को कभी बिगड़ जाने देना नहीं चाहते थे। इसलिए वह हमेशा छोटे भाई को डाटते रहते थे। उन्हें संसार का ज़्यादा अनुभव था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

Question 30.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

मगर टाइम-टेबिल बना लेना एक बात है, उस पर अमल करना दूसरी बात। पहले ही दिन उसकी अवहेलना शुरू हो जाती। मैदान की वह सुखद हरियाली, हवा के हलके-हलके झोंके, फुटबॉल की वह उछल-कूद, कबड्डी के वह दाँव-घात, वॉलीबॉल की वह तेज़ी और फुरती, मुझे अज्ञात और अनिवार्य रूप से खींच ले जाती और वहाँ जाते ही मैं सब कुछ भूल जाता। वह जानलेवा टाइम-टेबिल, वह आँखफोड़ पुस्तकें, किसी की याद न रहती और भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत का अवसर मिल जाता। मैं उनके साये से भागता, उनकी आँखों से दूर रहने की चेष्टा करता, कमरे में इस तरह दबे पाँव आता कि उन्हें खबर न हो। उनकी नज़र मेरी ओर उठी और मेरे प्राण निकले। हमेशा सिर पर एक नंगी तलवार-सी लटकती मालूम होती। फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेल-कूद का तिरस्कार न कर सकता था।

(क) टाइम-टेबिल पर अमल नहीं होने के क्या कारण थे?

(ख) लेखक भाई साहब की आँखों से दूर रहने का प्रयास क्यों करता था?

(ग) मौत और विपत्ति के बीच से क्या तात्पर्य है? ऐसी स्थिति में भी लेखक क्या करना पसंद करता था

(घ) भाई साहब को नसीहत का अवसर कब मिल जाता था?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

(क) लेखक बच्चा था इसलिए उसमें बचपन की मस्ती थी और खेलों में अधिक रुचि थी। इसलिए वह पढ़ाई का टाइम-टेबिल तो बना लेता था, परंतु उस पर अमल नहीं कर पाता था क्योंकि वह जब-तब बड़े भाई साहब से आँख बचाकर खेल के मैदान में भाग जाता था।

(ख) लेखक भाई साहब की आँखों से दूर रहने का सदा प्रयास करता रहता था क्योंकि ऐसा करने से वह पढ़ाई करने और उपदेश सुनने से बच सकता था तथा इससे उसे खेलने का मौका मिल सकता था लेखक का बचपन का मन पढ़ाई-लिखाई में बिलकुल नहीं लगता था। वह सदा खेलना-कूदना और मस्ती कना चाहता था।

(ग) "मौत और विपत्ति के बीच" से तात्पर्य यह है कि ऐसी स्थिति जिसमें बचने के कोई आसार नज़र न आते हों। मगर साहसी और दृढ़ इच्छाशक्ति वाले लोग ऐसी स्थिति से भी जिंदा बच निकलते हैं। अतः लेखक को बड़े भाई साहब की आँखों के सामने रहने से इसी प्रकार की स्थिति का आभास होता है। फिर भी लेखक खुले मैदान में जाकर खेलना-कूदना पसंद करता है। इसके लिए वह बड़े भाई साहब की फटकार और घुड़कियाँ भी सुननें के लिए तैयार रहता है।

(घ) लेखक जब खेलकर आता था और पढ़ाई नहीं करता था तब भाई साहब को नसीहत और फ़जीहत करने का अवसर मिल जाता था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in